बुद्ध काल या मौर्यपूर्व काल में मुद्रा एवं पूंजी बाजार का उद्भव

डॉ. कमलेश कुमार

सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

प्राचीन इतिहास विभाग

SNSRKS COLLEGE SAHARSA

भारतीय इतिहास में पहली बार मुद्रा एवं पूंजी बाजार का उद्भव हुआ| इस समय जिस मुद्रा का प्रचलन हुआ उसे आहत सिक्के कहा जाता है. यह चांदी तथा तांबे के बने थे, सोने के नहीं. सिक्कों के प्रचलन के कारण अर्थव्यवस्था का मौद्रीकरण हुआ. फलतः दुरस्थ व्यापार को बढ़ावा मिला. इससे समृद्धि को बल मिला.

1. **आहत सिक्के:**

आहत सिक्कों को धातु के चादरों को काट कर उनपर प्रतीकों का ठप्पा लगा कर बनाया जाता था. यह सांची में नहीं ढाले गये होते थे. इन पर विभिन्न प्रतीक बने होते थे. जैसे सूर्य, चंद्र, पहाड़ी, वृक्ष, मानक आदि. प्रारंभ में इन सिक्कों का प्रचलन व्यापारियों द्वारा किया गया था, राज्यों द्वारा नहीं. राज्य एवं शासकों में नंद वंश प्रथम था जिसने सिक्का जारी किया.

2. **पूंजी बाजार**:

इस समय ऐसे महाजनों, साहूकारों की सुचना मिलती है जो ब्याज पर पूंजी की लेनदेन किया करते थे. पूंजी निवेशको के इस वर्ग के आने के कारण पूंजी आधिक्य वाले क्षेत्र से पूंजी विहीन क्षेत्र में पूंजी का प्रवाह हुआ. इससे नये नये व्यवसायों, रोजगार में वृद्धि हुई. फलतः आर्थिक संवृद्धि को बल मिला.

3. **लंबी दूरी के व्यापार का उद्भव**:

हड़प्पा के पतन के लगभग 1000 साल बाद लंबी दूरी के व्यापार का प्रारंभ हुआ. इस समय उत्तरापथ मार्ग की चर्चा मिलती है जो राजगीर से तक्षशिला तक जाता था. इसी मार्ग से एक मार्ग मथुरा से उज्जैन होते हुए भड़ौच बंदरगाह तथा सोपारा बंदरगाह तक जाता था. राजगीर आगे ताम्रलिप्ति से जुड़ा था. साकेत से आगे एक मार्ग ताम्रलिप्ति में मिलता था.